INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 6 | JULY – 2025

सतत् विकास में उच्च शिक्षा की भूमिका

डॉ. विनय प्रताप सिंह[1] , डॉ. सुषमा वानखेड़े[2]
[1]सहा. प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष–शिक्षा विभाग) श्याम शिक्षा महाविद्यालय, सक्ती (छ.ग.)
[2]सहा. प्राध्यापक (शिक्षा विभाग) हसदेव शिक्षा महा. आमापाली कोरबा (छ.ग.)

सारांश –

सतत् विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन बनाए रखते हुए वर्तमान और भविष्य दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में उच्च शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उच्च शिक्षा न केवल ज्ञान और तकनीकी दक्षता प्रदान करती है, बल्कि छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय जागरूकता और नैतिक मूल्यों का भी विकास करती है। विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के माध्यम से नए नवाचार, शोध, और नीति निर्माण में योगदान दिया जाता है, जो सतत् विकास की दिशा में सहायक होते हैं।

हालाँकि, कुछ चुनौतियाँ जैसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी, शोध में निवेश की कमी, और पाठ्यक्रम में सतत् विकास की अपर्याप्तता अभी भी बनी हुई हैं। यदि इन बाधाओं को दूर कर दिया जाए, तो उच्च शिक्षा एक सशक्त माध्यम बन सकती है, जो सतत् और समावेशी भविष्य का निर्माण कर सके। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि एक संतुलित, सुरक्षित और समृद्ध विश्व की नींव उच्च शिक्षा के माध्यम से ही रखी जा सकती है।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में विकास की परिभाषा केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि अब यह आवश्यक हो गया है कि विकास सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संतुलन के साथ हो। इसी संतुलित और दीर्घकालिक प्रगति को ''सतत् विकास'' कहा जाता है। यह विकास केवल तभी संभव है जब समाज में जागरूक, जिम्मेदार और शिक्षित नागरिक हों, जो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, सामाजिक न्याय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रति सजग हों। इस दिशा में उच्च शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

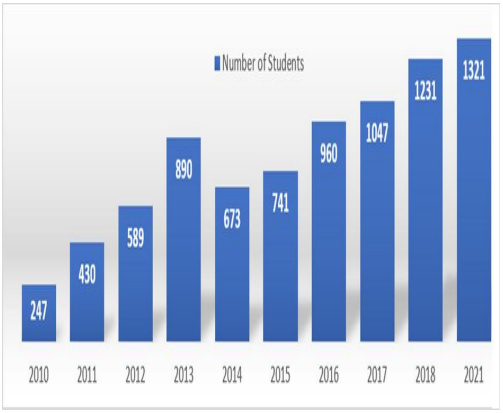

उच्च शिक्षा न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि सोचने, समझने और समस्याओं को हल करने की क्षमता भी विकसित करती है। यह व्यक्ति को न केवल अपने लिए, बल्कि समाज और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उत्तरदायी बनाती है। अतः सतत् विकास की प्राप्ति में उच्च शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य बन जाती है।

संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास को इस प्रकार परिभाषित करता है– ''ऐसा विकास जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करे''।

इस प्रकार, सतत् विकास न केवल पर्यावरणीय मुद्दों से, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों से भी निपटता है। अन्य कारकों के अलावा, बढ़ते मानव प्रवास, बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण के साथ–साथ गैर–नवीकरणीय संसाधनों के निरंतर ह्रास के कारण समाज और पर्यावरण पर बढ़ती माँगों को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि एक अधिक सतत् भविष्य के निर्माण के लिए वैश्विक कार्रवाई आवश्यक है।ज्ञान उत्पादक के रूप में अपनी प्राथमिक भूमिका को देखते हुए, उच्च शिक्षा एक अधिक सतत् भविष्य के निर्माण में एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य कर सकती है।

इस प्रकार, ''सतत् विकास के लिए शिक्षा'' की अवधारणा, हाल के वर्षों में, मानव विकास से जुड़ी कई समस्याओं के समाधान में मदद करने वाली प्रमुख शैक्षिक पहलों में से एक बन गई है। वास्तव में, जैसे–जैसे दुनिया लगातार वैश्वीकृत और परस्पर निर्भर होती जा रही है, एक सतत् भविष्य के निर्माण में उच्च शिक्षा की भूमिका संभवतः और भी महत्वपूर्ण होती जाएगी।

पहुँच और सतत् विकास

यूनेस्को के अनुसार, ''सतत् विकास के लिए शिक्षा ष्लोगों को एक सतत् भविष्य के लिए अपने सोचने और काम करने के तरीके को बदलने का अधिकार देती है''। इसलिए, इसमें जीवन के हर चरण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना शामिल है।विशेष रूप से, इसमें शिक्षण, अनुसंधान और सेवा के सभी पहलुओं में सतत् विकास के मुद्दों को एकीकृत करके छात्रों को सतत् विकास की आवश्यकता के बारे में शिक्षित करना शामिल है।

इसका अर्थ है सभी स्तरों पर शिक्षा प्रणाली को पुनर्निर्देशित करना ताकि लोग ऐसे तरीकों से सोच और व्यवहार कर सकें जो एक अधिक स्थायी ग्रह (उदाहरण के लिए, वैश्विक नागरिकता, पुनर्चक्रण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, नवीकरणीय ऊर्जा और सामाजिक उत्तरदायित्व) को बढ़ावा दें। व्यवहार में, इसका अर्थ है छात्रों को एक स्थायी भविष्य बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों से लैस करना। इसके लिए, छात्रों को आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच कौशल विकसित करने चाहिए, प्रामाणिक अंतःविषय शिक्षण गतिविधियों में शामिल होना चाहिए और एक ऐसी मूल्य प्रणाली विकसित करनी चाहिए जो स्वयं, दूसरों और ग्रह के प्रति उत्तरदायित्व पर जोर दे। इस प्रकार, सतत् विकास के लिए शिक्षा और संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास लक्ष्य (एसडीजी) एक साथ चलते हैं। वास्तव में, बढ़ती संख्या में विश्वविद्यालय सतत् विकास में डिग्री और प्रमाणपत्र कार्यक्रम प्रदान कर रहे हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन मानव जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम है, बल्कि व्यक्ति के चिंतन, समझ, व्यवहार, और व्यक्तित्व विकास में भी अहम भूमिका निभाता है। अध्ययन से व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य को समझता है, समाज में हो रहे परिवर्तनों को पहचानता है, और समस्याओं के समाधान खोजने में सक्षम बनता है।

नीचे कुछ प्रमुख कारण दिए गए हैं, जो यह स्पष्ट करते हैं कि अध्ययन क्यों आवश्यक है:–

1. ज्ञान प्राप्ति के लिए 2. सोचने–समझने की शक्ति बढ़ाने के लिए 3. व्यक्तित्व विकास के लिए 4. आजीविका के साधन के लिए 5. समाज में योगदान देने के लिए 6. भविष्य के निर्माण के लिए

उद्देश्य

1. सतत् विकास की महत्ता को समझाना ।
2. उच्च शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करना ।
3. वर्तमान चुनौतियों की पहचान करना ।
4. समाधान और सुझाव देना ।
5. छात्रों एवं समाज में जागरूकता बढ़ाना ।

शोध पद्धति

प्रकार– गुणात्मक शोध
स्रोत– द्वितीयक स्रोत (सरकारी रिपोर्ट, समाचार, केस स्टडी, एन.जी.ओ. रिपोर्ट)
डेटा विश्लेषण– केस स्टडी पद्धति और तुलनात्मक विश्लेषण
क्षेत्र– छत्तीसगढ़, राज्य केंद्रित विश्लेषण

सतत् विकास शिक्षा पैनल रिपोर्ट, 1998

''ईएसडी हमारे जीवन की गुणवत्ता और आने वाली पीढ़ियों के जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने और सुधारने के लिए आवश्यक सीखने के बारे में है। ईएसडी लोगों को ज्ञान, मूल्यों और कौशल को विकसित करने में सक्षम बनाता है ताकि हम स्थानीय और वैश्विक स्तर पर व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से चीजों को करने के तरीके के बारे में निर्णय लेने में भाग ले सकें, जो भविष्य में ग्रह को नुकसान पहुंचाए बिना वर्तमान जीवन की गुणवत्ता में सुधार करेगा।''

पाठ्यक्रम में स्थिरता

पाठ्यक्रम में, हमारा दृष्टिकोण यह है कि स्थिरता या सतत् विकास से संबंधित पाठ्यक्रम में कोई निश्चित ज्ञान सामग्री शामिल नहीं की जानी चाहिए। बल्कि, टिलबरी और वॉर्टमैन (2004) का अनुसरण करते हुए, हम ऐसे सांकेतिक पाठ्यचर्या विषयों की ओर संकेत करते हैं जो प्रत्येक अनुशासनात्मक क्षेत्र के लिए कमोबेश प्रासंगिक हो सकते हैं और जिनका उपयोग और अनुकूलन स्थिरता शिक्षा को और विकसित करने के लिए प्रवेश बिंदु के रूप में किया जा सकता है।

क्र.	पर्यावरणीय स्थिरता	आर्थिक स्थिरता	सामाजिक स्थिरता
1	प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन	वैकल्पिक वायदा	टिकाऊ समुदाय
2	भोजन और खेती	नेतृत्व और परिवर्तन	सांस्कृतिक विविधता
3	पारिस्थितिक प्रणालियाँ	शिक्षण संगठन	अंतरसांस्कृतिक समझ
4	अपशिष्ट / जल /ऊर्जा	कॉर्पोरेट की सामाजिक जिम्मेदारी	निर्मित वातावरण में स्थिरता
5	जैव विविधता	उपभोक्तावाद और व्यापार	यात्रा, परिवहन और गतिशीलता
6	जलवायु परिवर्तन	अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण	स्वास्थ्य और अच्छाई
7	पर्यावरणीय स्थिरता	जवाबदेही और नैतिकता	शांति, सुरक्षा और संघर्ष
8	प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन	अंतर्राष्ट्रीय विकास	नागरिकता, सरकार, लोकतंत्र
9		टिकाऊ और नैतिक पर्यटन	मानवाधिकार और आवश्यकताएं
10		जनसंख्या	सामाजिक स्थिरता
11		आर्थिक स्थिरता	टिकाऊ समुदाय

सतत् विकास शिक्षा में शैक्षणिक दृष्टिकोण

स्थिरता शिक्षा के लिए कोई श्सहीश शिक्षण पद्धति नहीं है, लेकिन इस बात पर व्यापक सहमति है कि इसके लिए सक्रिय, सहभागी और अनुभवात्मक शिक्षण विधियों की ओर बदलाव की आवश्यकता है जो शिक्षार्थियों को संलग्न करें और उनकी समझ, सोच और कार्य करने की क्षमता में वास्तविक अंतर लाएं।

हमने पांच शैक्षणिक तत्वों की पहचान की है, जो अनेक शैक्षणिक दृष्टिकोणों या विधियों को कवर करते हैं, जिनका उपयोग प्लायमाउथ के कर्मचारी इन तत्वों को शिक्षण वातावरण में लाने के लिए कर सकते हैं।

1. आलोचनात्मक चिंतन– जिसमें अधिक परंपरागत व्याख्यान शामिल हैं, लेकिन साथ ही नए दृष्टिकोण जैसे कि आत्मचिंतनशील विवरण, शिक्षण पत्रिकाएं और चर्चा समूह भी शामिल हैं।
2. व्यवस्थित सोच और विश्लेषण– वास्तविक दुनिया के केस अध्ययन और महत्वपूर्ण घटनाओं का उपयोग, परियोजना–आधारित शिक्षण, उत्तेजक गतिविधियाँ, और शिक्षण संसाधन के रूप में परिसर का उपयोग।
3. सहभागी शिक्षण– समूह या सहकर्मी शिक्षण, संवाद विकसित करने, अनुभवात्मक शिक्षण, क्रिया अनुसंधानध्कार्य करने के लिए सीखने, और स्थानीय सामुदायिक समूहों और व्यवसाय के साथ केस अध्ययन विकसित करने पर जोर दिया जाएगा।
4. भविष्य के परिदृश्यों के लिए रचनात्मक रूप से सोचना– भूमिका निभाने, वास्तविक दुनिया की जांच, भविष्य की कल्पना, समस्या–आधारित शिक्षा और उद्भव के लिए स्थान प्रदान करके।
5. सहयोगात्मक शिक्षण– जिसमें अतिथि वक्ताओं का योगदान, कार्य–आधारित शिक्षण, अंतःविषयकध्बहुविषयक कार्य, तथा सहयोगात्मक शिक्षण और सह–जांच शामिल है।

सतत् विकास प्राप्त करने में शिक्षा की भूमिका

सतत् विकास, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया था, औपचारिक रूप से वर्ष 1992 से विश्व समुदाय के लिए आरंभ किया गया था। इसमें शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह पर्यावरणीय विषयों से जुड़ा हुआ है। कोविड–19 महामारी से उत्पन्न त्रासदी विश्व को बेहतर निर्माण का एक अविश्वसनीय अवसर भी प्रदान करती है।

शैक्षणिक संस्थान, चाहे वे कॉलेज, स्कूल या विश्वविद्यालय हों, उनको यह सुनिश्चित करने के लिए अपने प्रयासों को दोगुना करना चाहिए कि विश्व के नीति निर्माताओं और नेताओं को विश्व की तेजी से जटिल विकास समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान की जाए।
इस प्रकार, सतत् विकास के लिए शिक्षा अनुसंधान को प्रोत्साहित करती है और मानव निर्मित निर्णयों से उत्पन्न होने वाली सतत् विकास संबंधी समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करती है। मानव संसाधनों में निवेश के रूप में शिक्षा कारकों के बीच महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो सतत् विकास में योगदान करती है।

ई एस डी सतत् समाज को प्रोत्साहित करती है (ESD promotes and encourages Sustainable Society)

एक अधिक सतत् समाज को प्राप्त करने के लिए गुणवत्ता शिक्षा एक महत्वपूर्ण कुंजी और उपकरण है। 2002 में जोहान्सबर्ग (Johannesburg) में संयुक्त राष्ट्र के विश्व शिखर सम्मेलन में इस महत्व पर जोर दिया गया था, जहां वर्तमान शिक्षा प्रणालियों की पुनः संरचना को एस डी (सतत् विकास) की कुंजी के रूप में रेखांकित किया गया था। यह ध्यान दिया जा सकता है कि एस डी के लिए शिक्षा एक सतत् समाज बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, मूल्यों और कार्यों के विकास को प्रोत्साहित करती है, जो पर्यावरण संरक्षण और रक्षण सुनिश्चित करती है, समाजिक समदृष्टि को प्रोत्साहित करती है, और आर्थिक कल्याण को उत्साहित करती है। परंपरागत रूप से, भारत एक सतत् समाज रहा है। शिक्षा में सतत् विकास के मूल्य को बढ़ावा देने के लिए, भारत सरकार ने अपने विभिन्न शिक्षा विभागों को पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में पर्यावरण शिक्षा (Environment Education E. E. ई ई) घटक पर सक्रिय रूप से काम करने का निर्देश दिया।

निष्कर्ष

उच्च शिक्षा सतत् विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह न केवल युवाओं को ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि उन्हें सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों के प्रति भी जागरूक बनाती है। उच्च शिक्षण संस्थानों के शोध, नवाचार, और नेतृत्व समाज को अधिक समावेशी, टिकाऊ और न्यायसंगत बनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। अतः यदि हमें एक संतुलित और समृद्ध भविष्य की ओर बढ़ना है, तो उच्च शिक्षा को सतत् विकास के लक्ष्य से जोड़ना अनिवार्य है। यही रास्ता आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित, समृद्ध और स्थायी भविष्य सुनिश्चित कर सकता है।

विश्व के देशों के सतत् विकास के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को संयुक्त राष्ट्र महासभा के महत्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में मान्यता प्राप्त है (2015 में प्रस्ताव)। ''शिक्षा तीव्र आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगत्ति प्राप्त करने और स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और समान अवसर के मूल्यों पर स्थापित सामाजिक व्यवस्था को बढ़ाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण एकल कारक है। शिक्षा के कार्यक्रम लोगों की ऊर्जा का उपयोग करने और देश के प्रत्येक भाग के प्राकृतिक और मानव संसाधनों को विकसित करने के लिए आम नागरिकता के बंधन को बनाने के प्रयास के आधार पर निहित है।'' एक शब्द में, शिक्षा को विकास की कुजी के रूप में माना जाता है और सामाजिक और आर्थिक न्याय के मौलिक आधार पर अपेक्षित है, जो कल्याणकारी राज्य के जुड़वा स्तंभ है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित विश्व में, यह शिक्षा है, जो लोगों की समृद्धि, कल्याण और सुरक्षा के स्तर को निर्धारित करती ळें

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://www-universityworldnews.com.
2. https://www-plymouth-ac-uk.translate.
3. "Sustainable Development: An Introduction"लेखक–Peter Rogers, Kazi Jalal, John Boyd
4. "Higher Education and Sustainable Development: A Model for Curriculum Renewal" लेखक–Chadwick Dearing Oliver
5. "Education for Sustainable Development"लेखक: Stephen Sterling